

IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- All One Day Exam
- CGPSC Mains
 - Paper No.- 2 (Essay)
 - Paper No.- 4 (Part 3)
 - Paper No.- 5 (Part 2)
 - Paper No.- 7 (Part 2)

सामरिक पेट्रोलियम भंडार

पेट्रोलियम उर्जा की बात की जाए तो भारत इस मामले में आत्मनिर्भर नहीं है। आज वर्तमान समय में भारत को अपनी आवश्यकता का 83 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करना पड़ता है। तेल की कीमतें विश्व के बाजार भाव से तय होती हैं यही कारण है कि भारत में आए दिन तेल की कीमतों में उतार चढ़ाव देखने को मिलता रहता है। वर्तमान कोविड-19 के दौर में पूरे विश्व में कच्चे तेल की डिमांड में काफी कमी आई है जिसके कारण कच्चे तेल के मूल्यों में ऐतिहासिक कमी हुई है। भारत अभी वर्तमान समय में 20-50 डॉलर प्रति बैरल की दर से कच्चे तेल का आयात कर रहा है (कुछ समय पूर्व तक कच्चे तेल का भाव 100 डॉलर प्रति बैरल था)। तेल की कीमतों में स्थिरता लाने और देश की उर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए भारत को सामरिक पेट्रोलियम भंडार बनाने की सख्त जरूरत आन पड़ी है।



क्यों सामरिक पेट्रोलियम भंडार की आवश्यकता महसूस की गई :-

✓ वर्ष 1990 में हुए प्रथम खाड़ी युद्ध के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में अत्यधिक उछाल आया था। जिसके कारण भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में काफी गिरावट आई थी तथा भारत के पास केवल तीन हफ्ते के लिए विभिन्न प्रकार के माल आयात करने के पैसे बचे थे।

✓ तेल बाजार में उत्पन्न हुई समस्या का दीर्घ कालिक समाधान निकालने हेतु "अटल बिहारी वाजपेयी सरकार" ने सन 1998 में ऑयल रिजर्व करने का आईडिया दिया था।

✓ कूड ऑयल स्टोरेज को जमीन के नीचे पत्थरों की गुफाओं में बनाया जाता है। पत्थर की गुफाएं मानव निर्मित होती हैं तथा इन्हें "हार्डड्रोकार्बन" जमा करने हेतु सबसे सुरक्षित माना जाता है। सामरिक पेट्रोलियम भंडार (SPR) के निर्माण एवं रखरखाव का जिम्मा "भारतीय सामरिक पेट्रोलियम रिजर्व लिमिटेड (ISPRL) को दिया गया है।

नोट

- वर्तमान समय में भारत के पास तीन स्थानों पर 5.33 MMT स्टोरेज की अंडरग्राउंड गुफाएं हैं

1. विशाखापट्टनम (1.33 MMT)
2. मंगलोर (1.5 MMT)
3. पादुर-1 (कर्नाटक) (2.5 MMT)

सभी तीन स्थानों को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 10 फरवरी 2019 को राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया।

- सरकार ने इस योजना के दूसरे चरण में 6.5 मिलियन मीट्रिक टन क्षमता के अतिरिक्त भंडार बनाने का निर्णय लिया है

1. चंडीखोल (ओडिशा) (4 MMT)
 2. पादुर-2 उडुपी जिला (कर्नाटक) (2.5 MMT)
- विशेष: बीकानेर एवं राजकोट (प्रस्तावित योजना)

- वर्तमान तीन भण्डारों से भारत की 13 दिन की पेट्रोलियम की जरूरत को पूरा किया जा सकता है।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



एकीकृत बागवानी विकास मिशन

एकीकृत बागवानी विकास मिशन “ फलों, सब्जियों, जड़ व कन्द फसलों, मशरूम, मसाले, फूल, सुगंधित पौधे, नारियल, काजू, कोको व बांस इत्यादि उत्पादों” के चौमुखी विकास की केंद्रीय पोषित योजना है। पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों को छोड़कर देश के सभी प्रदेशों में लागू इस योजना से जुड़े विकास कार्यक्रमों के कुल बजट का 85% हिस्सा भारत सरकार देती है जबकि शेष 15% राज्य सरकारें स्वयं वहन करती हैं। पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों के मामले में शत-प्रतिशत बजट केन्द्र सरकार ही वहन करती है साथ ही बांस विकास सहित राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, नारियल विकास बोर्ड, केन्द्रीय बागवानी संस्थान व कुछ अन्य बोर्ड अथवा एजेंसियों के कार्यक्रमों के लिए भी शत-प्रतिशत बजटीय योगदान भारत सरकार द्वारा दी जाती है।



एकीकृत बागवानी विकास मिशन के कुछ प्रमुख उद्देश्य:-

- बागवानी क्षेत्र के चौमुखी विकास को बढ़ावा देना जिसमें बांस और नारियल भी शामिल है।
- प्रत्येक राज्य अथवा क्षेत्र की जलवायु के अनुरूप क्षेत्र आधारित अलग-अलग कार्यनीति “ अनुसंधान, तकनीक को बढ़ावा, विस्तारीकरण, फसलोपरांत प्रबंधन, प्रसंस्करण और विपणन इत्यादि” को अपनाना है।
- कृषकों को “ FIG, FPO, FPC” जैसे कृषक समूहों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना ताकि समानता और व्यापकता आधारित आर्थिकी का निर्माण किया जा सके।
- गुणवत्ता, पौध सामग्री और सूक्ष्म सिंचाई के प्रभावी उपयोग के जरिये उत्पादकता सुधार को बढ़ावा देना।
- बागवानी क्षेत्र में ग्रामीण युवाओं में मेधा विकास को प्रोत्साहन देना, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



ASEEM PORTAL

IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Part-1)
 - Paper No. 07 (Part-3)

आत्मनिर्भर स्किल्ड एम्प्लोयी एम्प्लायर मैपिंग या फिर असीम पोर्टल एक ऐसा प्लेटफार्म है जो एम्प्लोयमेंट एक्सचेंज की तरह कार्य करेगा। जिस पर कुशल कर्मचारी तथा नियोक्ता ऑनलाइन आवेदन कर अपनी प्रोफाइल बना सकते हैं। जिसकी सहायता से कर्मचारी अपने लिए नौकरी ढूँढ सकते हैं तथा नियोक्ता अपनी कंपनी के लिए कर्मचारी ढूँढ सकते हैं।



A.S.E.E.M

Aatmanirbhar
Skilled Employee
Employer Mapping

क्यों आरंभ किया गया ASEEM PORTAL?

कोरोना वायरस महामारी के चलते पूरे देश में लंबे समय तक लॉकडाउन लगा दिया गया था। जिसके कारण बहुत सारे लोग बेरोजगार हो गए और अपने राज्य वापस लौट गए थे। ऐसे में जब लॉकडाउन खुला तो कंपनियों को लेबर शॉर्टेज की समस्या का सामना करना पड़ रहा था। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार द्वारा ASEEM PORTAL की शुरुआत की गई जो एम्प्लोयमेंट एक्सचेंज की तरह कार्य करेगा।

-: नोट :-

- इस पोर्टल के माध्यम से "37" अलग-अलग सेक्टर के स्किल्ड मजदूरों को रोजगार दिए जाएंगे।
- मजदूरों को यह जानकारी प्राप्त हो पाएगी कि उनके आसपास रोजगार के कितने अवसर उपलब्ध हैं।
- यह पोर्टल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से कार्य करता है।
- ASEEM PORTAL की शुरुआत भारत सरकार की "Ministry of Skill Development and Entrepreneurship" ने "National Skill Development Corporation" के साथ मिलकर किया है।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- All One Day Exam
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Part-1 or Part-2)

हरित क्रांति

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वैश्विक स्तर पर अनाज व कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए शोध किये जा रहे थे तथा अनेक वैज्ञानिक द्वारा इस क्षेत्र में कार्य किया जा रहा था। इसमें "प्रोफेसर नार्मन बोरलाग" प्रमुख हैं जिन्होंने गेहूं की हाइब्रिड प्रजाति का विकास किया था, जबकि भारत में हरित क्रांति का जनक "एम.एस. स्वामीनाथन" को माना जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत खाद्यानों तथा अन्य कृषि उत्पादों की भारी कमी से जूझ रहा था। वर्ष 1947 में देश को स्वतंत्रता मिलने से पहले बंगाल में भीषण अकाल पड़ा था, जिसमें 20 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई थी। इसका एक प्रमुख कारण कृषि को लेकर औपनिवेशिक सरकार की कमजोर नीतियां थी। वर्ष 1960 के मध्य में स्थिति और भी दयनीय हो गई जब पूरे देश में अकाल की स्थिति बनने लगी। उन परिस्थितियों में भारत सरकार ने विदेशों से हाइब्रिड प्रजाति के बीज मंगाए। अपनी उच्च उत्पादकता के कारण इन बीजों को उच्च उत्पादकता की किस्म (High Yielding Varieties-HYV) कहा गया।

सर्वप्रथम HYV को वर्ष 1960-63 के दौरान देश के 7 राज्यों के 7 चयनित जिलों में प्रयोग किया गया और इसे "गहन कृषि जिला कार्यक्रम" (Intensive Agriculture District Program-IADP) नाम दिया गया। यह प्रयोग सफल रहा तथा वर्ष 1966-67 में भारत में हरित क्रांति को औपचारिक तौर पर अपनाया गया।

हरित क्रांति में जो नई कृषि रणनीति अपनाई गई उसके घटक निम्न हैं-

- ◆ उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग।
- ◆ कृषि उत्पादन में उर्वरक, खाद व रसायन का प्रयोग।
- ◆ एक साथ कई फसलों का उत्पादन।
- ◆ उन्नत कृषि तकनीक का प्रयोग।
- ◆ बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण (परिवहन, सिंचाई, भण्डारण)।
- ◆ मूल्य प्रोत्साहन।
- ◆ बेहतर वित्तीय सहायता।
- ◆ सिंचाई की सुविधाओं का विकास इत्यादि।

लाभ-

कृषि उत्पादन में वृद्धि, रोजगार के अवसर का सृजन, अनाज की कीमतों में स्थिरता, उद्योगों के साथ संबंध स्थापित हुआ।

नोट-

भारत में हरित क्रांति के जनक एम. एस. स्वामीनाथन ने गेहूं के संकरित बीज (मैक्सिको+पंजाब के घरेलू किस्म के बीज) बनाने में अपना अहम योगदान दिया था।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



- All Exam Interview
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 03 (Part-2)

अधिकतम शासन: ई शासन के माध्यम से जन पहुंच



भारत में ई-गवर्नेंस की शुरुआत रक्षा सेवाओं, आर्थिक नियोजन, राष्ट्रीय जनगणना, चुनाव, कर संग्रह आदि के लिए कम्प्यूटरीकरण पर जोर के साथ 1960 के दशक के अंत में और 1970 के दशक के आरंभ में हुई। 1990 के दशक की शुरुआत में

यह साकार होती दिखी किन्तु इसकी व्यापकता हाल के वर्षों में खासकर डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की शुरुआत के बाद बढ़ी है और एक-एक नागरिक तक इसे पहुंचाने का प्रयास सफल होता दिख रहा है।

ई-गवर्नेंस, सरकार के भीतर, सरकार और राष्ट्रीय, राज्य, नगर निगम और स्थानीय स्तर की सरकारी एजेंसियों, नागरिकों के मध्य दक्षता, प्रभावशील पारदर्शिता और सूचना और व्यवहार की जवाबदेही के आदान-प्रदान में बदलाव के लिए, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग है। इसका उद्देश्य नागरिकों के सूचना तक पहुंच और उसके उपयोग के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाना भी है।

ई-गवर्नेंस का उद्भव वेब जगत की प्रमुख घटनाओं में से एक रहा है। चूंकि इंटरनेट में डिजिटल समुदायों को विकसित होने और यह सोचने में कि वे वास्तव में देश और युद्ध की स्थिति में आसपास के व्यक्तियों से जुड़ने में समर्थ हो रहे हैं, उनकी सहायता की है। इसने राष्ट्रीय सरकारों के समक्ष कई चुनौतियां व अवसर प्रस्तुत किए हैं। लोकतांत्रिक राज्यों में सरकारें मुख्य रूप से एक प्रतिनिधि तंत्रात्मक होती हैं। जिसके तहत चयनित कुछ बहसें होती हैं राष्ट्र व राज्य के नागरिकों की ओर से उनके लिए विधान अधिनियम किए जाते हैं। इसके विभिन्न पहलु हैं, जो ई-गवर्नेंस के संदर्भ में महत्व रखते हैं।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- All One Day Exam
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Part-2)

ऑपरेशन फ्लड / श्वेत क्रांति

ऑपरेशन फ्लड (1970), ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत भारतीय राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड द्वारा शुरू किया गया एक अभियान जिसका लक्ष्य दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देना था।

(दुग्ध कृषि / डेयरी उद्योग / दुग्ध उद्योग, कृषि की एक श्रेणी है। यह पशुधन से जुड़ा एक बहुत लोकप्रिय उद्यम है जिसके अंतर्गत दुग्ध उत्पादन इसका प्रसंस्करण व खुदरा बिक्री के कार्य किये जाते हैं।)

इतिहास-

1964-65 के दौरान देश में "गहन पशु विकास कार्यक्रम" (ICDP) की शुरुआत की गई थी जिसके तहत देश में दुग्ध व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए पशु मालिकों को पशुपालन में सुधार हेतु एक पैकेज की व्यवस्था की गई थी। बाद के समय में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड द्वारा देश में एक नये कार्यक्रम "ऑपरेशन फ्लड" 1970 की शुरुआत की गई।

आपरेशन फ्लड को तीन चरणों में शुरू किया गया था

- (1) प्रथम चरण- 1970-1980
- (2) दूसरा चरण- 1981-1985
- (3) तीसरा चरण- 1985-1996

श्वेत क्रांति के जनक-

डॉ. वर्गीज कुरियन ने 1949 में कैरा जिला दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (KDCMPUL) के अध्यक्ष त्रिभुवन दास पटेल के अनुरोध पर डेयरी का काम संभाला। सरदार वल्लभभाई पटेल की पहल पर इस डेयरी की स्थापना की गई थी। डॉ. कुरियन के नेतृत्व में गांव गांव KDCMPUL की को-ऑपरेटिव सोसाइटियां बनने लगीं। इतना दूध एकत्रित होने लगा कि उनकी आपूर्ति मुश्किल होने लगी। इस समस्या के निदान हेतु "मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट" लगाने का निर्णय लिया गया।

नोट

- राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के संस्थापक अध्यक्ष डॉ वर्गीज कुरियन थे।
- KDCMPUL को ही बाद के समय में AMUL का नाम प्रदान किया गया।
- ऑपरेशन फ्लड को ही श्वेत क्रांति कहा जाता है।

देश में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में "श्वेत क्रांति" को मान्यता दी गई- भारत गांवों में बसता है। देश की 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या ग्रामीण है तथा 60 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। भारतीय दुग्ध उत्पादन से जुड़े महत्वपूर्ण सांख्यिकी आंकड़ों के अनुसार देश में 70 प्रतिशत दुग्ध की आपूर्ति छोटे/सीमांत/भूमिहीन किसानों से ही होती है। भारत में कृषि भूमि की अपेक्षा पशुओं का अधिक समानता पूर्वक वितरण है। भारत की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने में डेयरी उद्योग की एक अहम भूमिका है।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



नीली क्रांति

नीली क्रांति मिशन का उद्देश्य देश तथा मछुआरों एवं मछली किसानों (उत्पादनकर्ता) की आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित करना तथा जैव सुरक्षा एवं पर्यावरणीय सरोकारों को ध्यान में रखते हुए संपोषणीय ढंग से मछली पालन विकास के लिए जल संसाधनों की पूर्ण क्षमता के उपयोग माध्यम से खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में योगदान देना है। इसमें मछली पालन क्षेत्र के बदलाव, आर्थिक निवेश, बेहतर प्रशिक्षण और अवसंरचना के विकास की परिकल्पना है।

नीली क्रांति के तहत मछली पकड़ने के नए बंदरगाहों का निर्माण, मछली पकड़ने हेतु नौकाओं का आधुनिकीकरण, मछुआरों को प्रशिक्षण देना तथा स्व-रोजगार की गतिविधि के रूप में मछली पकड़ने के कार्य को बढ़ावा दिया जा रहा है। महिलाओं और उनके समूहों को प्रशिक्षण तथा क्षमता-निर्माण और परियोजनाओं के आबंटन में प्राथमिकता दी जाएगी।

भारत में नीली क्रांति -

- भारत में इसकी शुरुआत सातवीं पंचवर्षीय योजना से हुई थी जो वर्ष 1985 से वर्ष 1990 के बीच कार्यान्वित की गई। इस दौरान सरकार ने फिश फार्मर्स डेवलपमेंट एजेंसी (FFDA) को प्रायोजित किया।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना (वर्ष 1992 से वर्ष 1997) के दौरान सघन मरीन फिशरिज प्रोग्राम शुरू किया गया जिसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सहयोग को प्रोत्साहित किया गया।

उद्देश्य -

- अंतर्देशीय तथा समुद्री क्षेत्रों में देश की कुल मत्स्य उत्पादन की संभावना का पूर्ण रूप से दोहन करना।
- नई प्रौद्योगिकियों तथा प्रक्रियाओं पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ मत्स्यिकी के क्षेत्र को एक आधुनिक उद्योग के रूप में परिवर्तित करना।
- ई-कॉमर्स तथा अन्य प्रौद्योगिकियों और वैश्विक सर्वश्रेष्ठ नवोन्मेषों को शामिल करते हुए उत्पादकता बढ़ाने और फसलोत्तर बुनियादी सुविधाओं के बेहतर विपणन पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के साथ साथ मछुआरों और मत्स्य कृषकों की आय को दोगुना करना।
- सहकारी समितियों, उत्पादक कम्पनियों और अन्य ढांचों में संस्थागत क्रिया विधियों के माध्यमों को शामिल करते हुए मछुआरों और मत्स्य-कृषकों को लाभ के प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करने के साथ वर्ष 2020 के अंत तक निर्यात की आय को तीन गुना करना।
- देश की खाद्य एवं पोषण संबंधी सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

एक दृष्टि -

धारणीयता, जैव-सुरक्षा और पर्यावरणीय चिंताओं को ध्यान में रखते हुए मछुआरों तथा मत्स्य-कृषकों की आय के स्तर में मूलभूत सुधार के साथ-साथ देश की मत्स्यिकी की पूर्ण संभावना के एकीकृत विकास के लिए समर्थ बनाने वाले एक पर्यावरण का सृजन करना है।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



अंतरिक्ष मलबा

IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 04 (Technology)

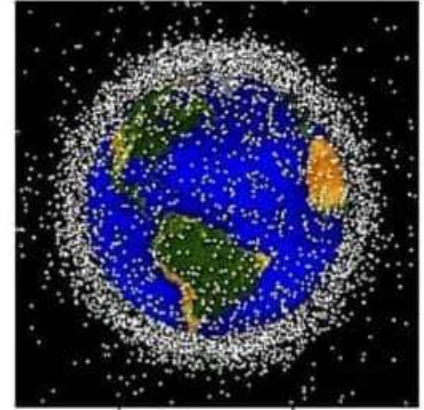
क्या है अंतरिक्ष मलबा-

जब अंतरिक्ष मलबे की बात आती है, तो यह सौर मण्डल के खगोलीय पिंड जैसे क्षुद्रग्रह, धूमकेतु और उल्कापिंड (बाहरी अंतरिक्ष में एक छोटी चट्टान या धातु निकाय) में पाए जाने वाले प्राकृतिक मलबे को संदर्भित करता है। किन्तु आज वर्तमान के संदर्भ में रॉकेट, खंडित उपकरण व पुराने उपग्रहों के अवशेषों को भी अंतरिक्ष मलबे के अंतर्गत शामिल किया जाता है, क्योंकि ये अवशेष भी पृथ्वी के कक्ष में गुरुत्वाकर्षण बल के कारण घूमते रहते हैं और आपस में टकराकर मलबे पैदा करते हैं। इनकी संख्या अंतरिक्ष में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

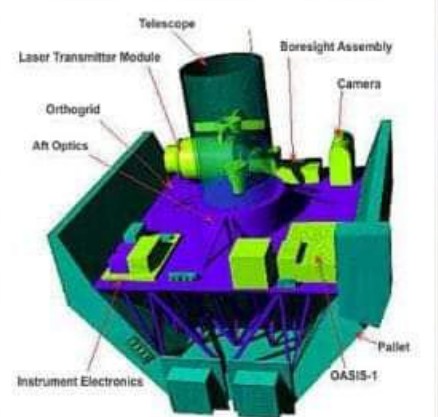
दूसरे शब्दों में कहें तो मानव निर्मित अंतरिक्ष अनुसंधान के वे अनुपयोगी अवशेष जो अंतरिक्ष में पृथ्वी के चक्कर लगा रहे हैं, इन्हे ही अंतरिक्ष मलबा कहा जाता है।

नोट:-

- संयुक्त राज्य स्पेस सर्विलांस नेटवर्क के अनुसार अंतरिक्ष में 10 सेंटीमीटर से बड़े लगभग 23000 मलबे बिखरे पड़े हैं।
- अंतरिक्ष में स्थित ये मलबे कृत्रिम उपग्रह व पृथ्वी के वायुमंडल के लिए खतरनाक हैं।



अंतरिक्ष मलबा



लिडार प्रणाली

अंतरिक्ष मलबे को ट्रैक करने के लिए लिडार (रडार और ऑप्टिकल डिटेक्टर का संयोजन) नामक उपकरण का उपयोग किया जा रहा है।

नोट:- रेडियो तरंगों के माध्यम से अंतरिक्ष के मलबे का पता लगाने के लिए शोध कार्य किए जा रहे हैं।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /

